अध्याय -2

भारत की विविधताओं में एकता
(Unity in Diversity in Bharat)

भारत विश्व में प्राकृतिक व सांस्कृतिक दृष्टि से विशिष्ट स्थान रखता है। छोटे से क्षेत्र की यात्रा करने पर ही हमारे देश में निहित क्षेत्रीय विलक्षणताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। ये विविधताएँ प्राकृतिक स्वरूपों, जलवायु, वनस्पति, मृदा, कृषि, उद्योग, आवागमन के साधन, लोगों के जीवन स्तर, वेशभूषा, भाषा, बोली, गीत-संगीत, रीति-रिवाज, भोजन, सामाजिक व्यवहार, धार्मिक आस्थाओं, पूजा-पाठ की विधियों आदि विभिन्न पक्षों में स्पष्ट रूप से झलकती हैं। संक्षिप्त सी यात्रा करने पर ही हमें विभिन्न प्रकार की स्थलाकृतियाँ - पर्वत श्रेणियाँ, पठार, मैदान, घाटियाँ, मरूस्थल आदि दिखाई दे सकते हैं। मृदा का रंग बदलता हुआ स्पष्ट दृष्टिगोचर हो सकता है। विभिन्न प्रकार की वनस्पति, भांति-भांति की फसलें आदि दिखाई दे सकती हैं। लोगों की बोली, उच्चारण एवं अभिव्यक्ति की विधियों में अन्तर स्पष्ट झलकता है। अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग प्रकार की वेश-भूषा एवं भांति-भांति के भोज्य पदार्थ भी आकर्षित करते हैं। लेकिन इन सभी विविधताओं के बावजूद हमारी यात्रा में हमें यह महसूस नहीं होता कि हम किसी अपरिचित क्षेत्र में आ गये हैं। हमें हमारे देश में हर जगह एक अनूठे अपनेपन का अहसास होता है। यह हमारे देश की एक विलक्षणता है। यह विलक्षणता **विविधताओं में एकता** की है।

विविधताएँ

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि भारत में अनेक प्रकार की विविधताएँ पाई जाती हैं। ये सभी विविधताएँ न केवल हमारे समाज को विभिन्न रंग प्रदान करती हैं बल्कि भारतीय समाज को एक अनोखे समरस समाज के सूत्र में बांधती है। भारत में मिलने वाली विविधताओं को पूर्ण रूप से समझने के लिए इन्हें तीन प्रधान वर्गों में बांटा जा सकता है -

क. प्राकृतिक विविधताएँ (Natural Diversities),
ख. आर्थिक विविधताएँ (Economic Diversities), तथा
ग. जनसांख्यिकीय विविधताएँ (Demographic Diversities)

क. प्राकृतिक विविधताएँ (Natural Diversities)

1. स्थलाकृतिक विविधता (Topographical Diversity) - हमारे देश में अनेक प्रकार की स्थलाकृतियाँ पाई जाती हैं। इन विविध स्थलाकृतियों का अनुपम प्राकृतिक, आर्थिक, पर्यटक तथा दार्शनिक महत्व है। एक ओर जहाँ हमारी उत्तरी सीमा पर गगनचुम्बी एवं उच्च हिमाच्छादित पर्वत श्रेणियाँ विस्तृत हैं वहीं दूसरी ओर इनके पदीय क्षेत्र में ब्रह्मपुत्र-गंगा-सतलज नदी का विस्तृत मैदान फैला हुआ है। ब्रह्मपुत्र व सिन्धु नदियों की गहरी एवं संकीर्ण घाटियाँ (Gorge), अरावली के रूप में अवशिष्ट पर्वत, विशाल उष्ण एवं शुष्क थार का मरूस्थल, नर्मदा तथा ताप्ती नदियों के खुले नद-मुख (Estuaries), तटीय मैदान, विभिन्न आकारों के द्वीप एवं द्वीपसमूह हमारे देश की उच्चावच सम्बन्धी विविधताओं के आभूषण हैं। पौराणिक काल से ही हमारे देश के उत्तरी प्रहरी हिमालय पर्वत एकान्त स्थल के रूप में सन्त-महात्माओं के लिए साधना स्थल रहे हैं। इसी क्षेत्र से हमारे देश की नित्यवाही नदियाँ जल प्राप्त करती हैं। यहाँ की उच्च हिमाच्छादित एवं चित्ताकर्षक पर्वत श्रेणियाँ तथा पर्वत चोटियाँ बड़ी संख्या में पर्यटकों को न केवल मनोरम दृश्य उपलब्ध कराती हैं बल्कि ग्रीष्म ऋतु की झुलसती गर्मी में आनन्द एवं सुख की अनुभूति भी कराती है।

2. संरचनात्मक विविधता (Structural Diversity) - संरचना की दृष्टि से पूरे विश्व में भारत कुछ गिने-चुने देशों में से एक है जहाँ सभी युगों की शैलें पाई जाती हैं। एक ओर दक्षिण का पठार विश्व के

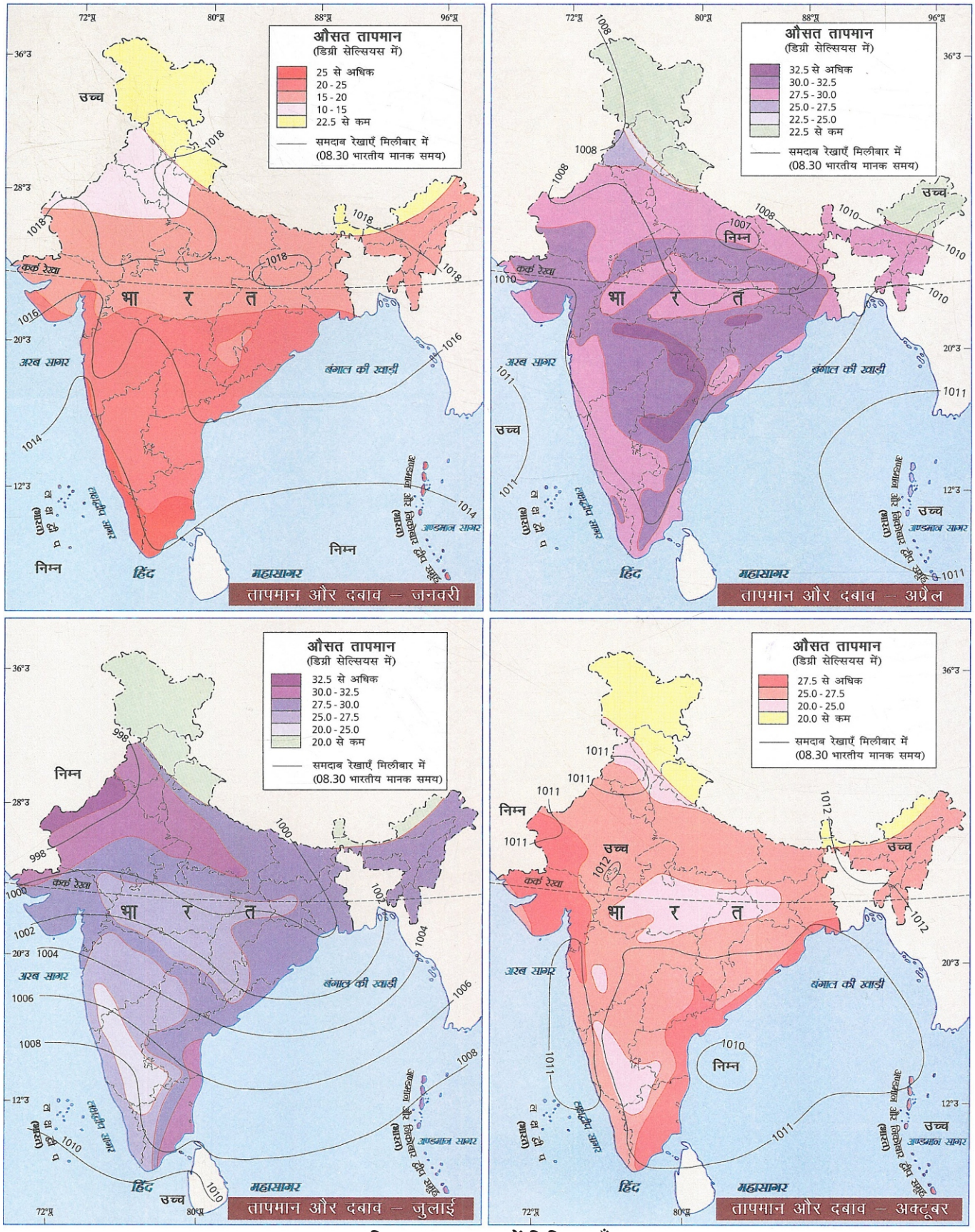

चित्र 2.1 – भारत में विविधताएँ

प्राचीनतम पठारों (**प्राचीन पिण्डों - Old Massifs**) में से एक है। इसी प्रकार अरावली, सतपुड़ा, विन्ध्याचल आदि पर्वतश्रेणियाँ विश्व के प्राचीनतम पर्वतों में सम्मिलित की जाती हैं। इसके विपरीत हमारी उत्तरी सीमा पर विस्तृत विशाल हिमालय पर्वत विश्व के नवीन मोड़दार पर्वतीय क्रम (Newly folded mountain system) के अंग हैं। विशाल गंगा-सतलज का मैदान, नदियों के डेल्टा प्रदेश एवं बाढ़ के मैदान नवीनतम कांप मिट्टी से निर्मित हैं।

3. जल प्रवाह सम्बन्धी विविधता (Diversity of Drainage) - हमारे देश में जल प्रवाह सम्बन्धी काफी विविधताएँ पाई जाती हैं। इसका प्रमुख कारण हमारे देश का मानसूनी जलवायु है, जिसके अन्तर्गत वर्ष का अधिकांश भाग शुष्क बीतता है तथा वर्षाकाल की अवधि बहुत छोटी होती है। इसके परिणामस्वरूप हमारे देश की अधिकांश नदियाँ वर्षाकाल में ही प्रवाहित होती हैं। इन्हें मौसमी नदियाँ (Seasonal Rivers) कहते हैं। हिमालय से निकलने वाली सभी नदियाँ नित्यवाही हैं क्योंकि इनमें शुष्क काल में हिम का पिघला हुआ जल प्रवाहित होता रहता है। इसी प्रकार झीलों में भी विविध प्रकृति पाई जाती है। एक ओर राजसमन्द, जयसमन्द आदि मीठे पानी की झीलें हैं जबकि सांभर, डीडवाना, लूणकरणसर, पचपद्रा आदि खारे पानी की झीलें हैं, जिनसे नमक का उत्पादन किया जाता है।

4. जलवायु सम्बन्धी विविधता (Climatic Diversity) - हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रों में जलवायु सम्बन्धी अनेक विविधताएँ पाई जाती हैं। ये विविधताएँ ऋतुओं के अनुसार भी महत्वपूर्ण हैं। ग्रीष्म ऋतु में हमारे देश में सर्वाधिक तापमान थार के मरूस्थल में पाया जाता है जहाँ कई स्थानों पर तापमान 45° सेल्शियस से भी अधिक हो जाता है। इस ऋतु में सामान्यत: दक्षिण की ओर तथा तटीय क्षेत्रों की ओर तापमान कम होता जाता है। इन क्षेत्रों में तापमान 28° से 30° सेल्शियस तक मिलता है। इसके विपरीत सर्दियों में उत्तरी भारत के कई स्थानों में तापमान शून्य से नीचे गिर जाता है तथा दक्षिण एवं तटीय क्षेत्रों की ओर तापमान बढ़ता-बढ़ता 25° से 30° सेल्शियस के मध्य पाया जाता है। इस प्रकार मौसम के अनुसार इन तापमान सम्बन्धी परिस्थितियों में काफी विविधताएँ पाई जाती हैं (चित्र संख्या 2.2)।

तापमान से जुड़ा हुआ मुख्य पहलू वायुदाब एवं पवनें हैं। **वायुदाब तथा तापमान का विपरीत सम्बन्ध** होता है। अत: ग्रीष्म ऋतु में थार के मरूस्थल में वायुदाब न्यूनतम तथा सागरीय क्षेत्र में अधिकतम पाया जाता है (चित्र संख्या 2.1)। इसके विपरीत सर्दियों में उत्तरी भारत में उच्च दाब तथा सागरीय क्षेत्रों में न्यून दाब पाया जाता है। इस प्रकार ऋतुओं के अनुसार वायुदाब में विपरीत परिवर्तन हो जाता है। इसी के परिणामस्वरूप मौसम के अनुसार पवनों की दिशा में भी विपरीत परिवर्तन होता है। ग्रीष्म ऋतु में पवनें सागर से स्थल की ओर तथा शीत ऋतु में स्थल से सागर की ओर चलती हैं।

भारत में मौसमी तथा क्षेत्रीय वितरण प्रारूप के रूप में वर्षा सम्बन्धी भी अत्यधिक विविधताएँ पाई जाती हैं। हमारे देश की वर्षा का 90 प्रतिशत भाग ग्रीष्म ऋतु में प्राप्त होता है जबकि शीत ऋतु कुछ क्षेत्रों को छोड़कर शुष्क बीतती है। इस ऋतु में हमारे देश की वर्षा का लगभग 10 प्रतिशत भाग ही प्राप्त होता है (चित्र संख्या 2.2)। क्षेत्रीय वितरण प्रारूप के रूप में एक ओर जहाँ मॉसिनराम में वार्षिक वर्षा का औसत 1300 से.मी. से भी अधिक रहता है, वहीं दूसरी ओर पश्चिमी राजस्थान में यह औसत घटकर 5 से.मी. से भी कम रह जाता है।

5. जलीय आवश्यकताओं की विविधता (Diversity of Water Requirement) - भारत एक कृषि प्रधान देश है। मानसूनी जलवायु के कारण कृषि सम्बन्धी कार्यों के लिए हमारे देश के अधिकांश भागों में उपयुक्त मात्रा में जल उपलब्ध नहीं हो पाता। इस कारण देश के विभिन्न भागों में कृषि कार्यों के लिए जलीय आवश्यकताओं की व्यापक भिन्नताएँ पाई जाती है। जलीय आवश्यकताएँ वर्षा की विषमता पर निर्भर करती है। किसी क्षेत्र में औसत वार्षिक वर्षा से कम या अधिक होने वाली वर्षा की मात्रा **विषमता** कहलाती है। जिन क्षेत्रों में वर्षा की विषमता सबसे अधिक होती है उन क्षेत्रों में जलीय आवश्यकता भी सबसे अधिक होती है। उसका कारण यह है कि जहाँ वर्षा का औसत कम होता है वहाँ वर्षा की विषमता सर्वाधिक पाई जाती है। यदि किसी क्षेत्र में वार्षिक वर्षा का औसत 10 से.मी. है तथा वहाँ किसी वर्ष में यदि वर्षा 15 से.मी. हो जाती है, तो वर्षा की विषमता +50 प्रतिशत हो जायेगी। जबकि 100 से.मी. औसत वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्र में यदि किसी वर्ष 5 से.मी. वर्षा अधिक अर्थात 105 से.मी. हो जाये तो वर्षा की विषमता केवल +5 प्रतिशत होगी।

वर्षा की इन विशेषताओं के कारण अनेकों बार भारत के कुछ क्षेत्रों में सूखा पड़ता है तथा कुछ क्षेत्रों में बाढ़ें आती रहती हैं। इन्हें क्रमश: **सूखा प्रवृत** व **बाढ़ प्रवृत** क्षेत्र कहते हैं। ये भी जलीय उपलब्धि के आधार पर विविधताओं के प्रतीक हैं।

6. मृदा सम्बन्धी विविधता (Soil Diversity) - हमारे देश में स्थलाकृतिक, संरचनात्मक एवं जलवायु सम्बन्धी विविधताओं के कारण अनेक प्रकार की मृदाएँ पाई जाती हैं। हमारे देश में मिलने वाली मुख्य मृदाएँ काँप, काली, लाल, पीली, भूरी, बलुई, चीका, लैटराइट आदि हैं। इन मिट्टियों की उर्वरकता सम्बन्धी भिन्नताएँ भी प्रमुख हैं।

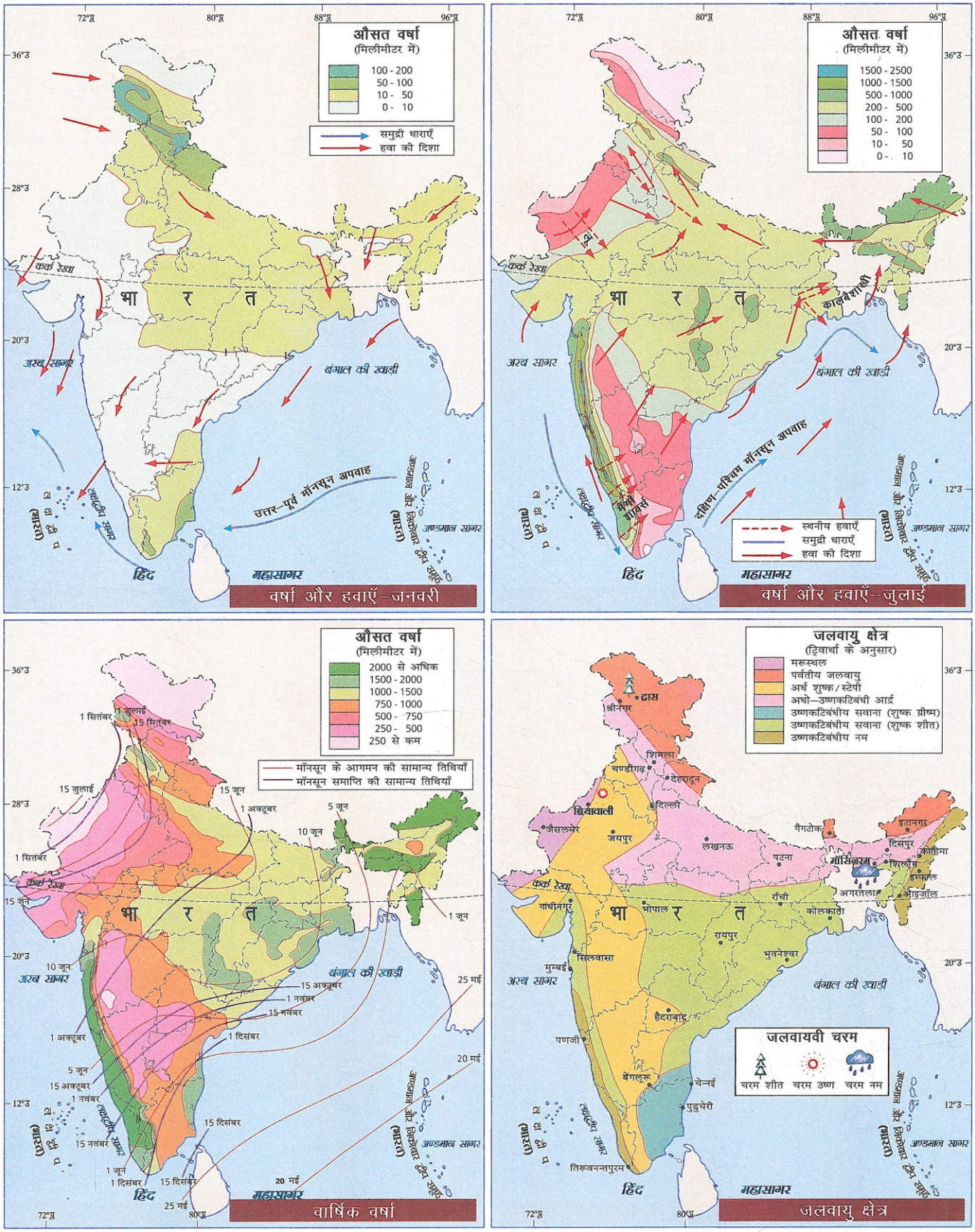

चित्र 2.2 - भारत में विविधताएँ

काँप एवं काली मृदा हमारे देश की सबसे अधिक उपजाऊ मिट्टियाँ हैं। लैटराइट मृदा अपेक्षाकृत कम उपजाऊ होती है। बलुई मिट्टी जल के अभाव के कारण कृषि कार्यों के लिए उपयोग में नहीं आ पाती।

7. वनस्पतिक विविधता (Vegetational Diversity) - प्राकृतिक विविधताओं के कारण हमारे देश में विविध प्रकार की वनस्पतियाँ एवं वन पाये जाते हैं। हमारे देश के उत्तरी पर्वतीय क्षेत्र में ऊँचाई पर नुकीली पत्ती वाले वन एवं निचले ढालों पर चौड़ी पत्ती वाले वन पाये जाते हैं। पश्चिमी घाट के पश्चिमी ढालों पर उष्ण-आर्द्र सदाबहार वन पाये जाते हैं। उत्तरी-पूर्वी भारत में भी सदाबहार वन पाये जाते हैं। शेष भारत के अधिकांश भागों में पतझड़ी वन का विस्तार है। अत्यन्त शुष्क एवं अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में क्रमशः कंटीले वन एवं घास पाई जाती है। जैसलमेर का **सम** क्षेत्र तो वनस्पति रहित है।

ख. आर्थिक विविधताएँ (Economic Diversities)

1. कृषि सम्बन्धी विविधता (Agricultural Diversity) - हमारे देश में अनेक प्रकार की कृषि के विकास की अवस्थाएँ देखने को मिलती है। सुदूर पर्वतीय एवं वन क्षेत्रों में आज भी हमारे देश के कई भागों में **स्थानान्तरित कृषि** (Shifting Cultivation) की जाती है, जो कि कृषि का सबसे अविकसित रूप है। आसाम में इस प्रकार की कृषि को **झूमिंग** कहते हैं। उत्तरी पूर्वी भारत के अनेक पर्वतीय ढालों पर विकसित **बागाती कृषि** (Plantation Agriculture) की जाती है। यह सुनियोजित उन्नत कृषि है, जिसमें प्रबन्ध कौशल की प्रमुखता होती है। अधिकांश भारत में छोटे कृषक **आत्मनिर्भरता मूलक मिश्रित कृषि** करते हैं। इसके अन्तर्गत वे कृषि के साथ-साथ अपने जीवन निर्वाह के लिए पशुपालन भी करते हैं। सम्पन्न एवं विकसित क्षेत्रों में कृषक बड़े पैमाने पर **व्यापारिक कृषि** करते हैं।

प्राकृतिक विविधताओं के कारण भारत के विभिन्न क्षेत्रों में एवं विभिन्न ऋतुओं में विविध प्रकार की फसलें उगाई जाती हैं। हमारा देश इस मामले में अनुपम है जहाँ उष्णकटिबन्धीय फसलें जैसे - चावल, चाय, कॉफी, जूट आदि, शीतोष्ण कटिबन्धीय फसलें जैसे - गेहूँ, कपास, मक्का, तम्बाकू आदि तथा शुष्क प्रदेशीय फसलें जैसे - ज्वार, बाजरा आदि उगाये जाते हैं। इस प्रकार हमारे देश में विविध फसलें उगाई जाती हैं।

विकास की अवस्थाओं के प्रतीक के रूप में कृषि औजार एवं कृषि कार्यों के तरीकों में भी विविधता पाई जाती है। हमारे देश के अधिकांश छोटे कृषक आज भी हल चलाकर, पशुओं की सहायता से तथा गोबर की खाद का उपयोग करके कृषि कार्य करते हैं। यह सामान्यतः **आत्मनिर्भरतामूलक कृषि** होती है। इसके विपरीत बड़े एवं सम्पन्न कृषक यान्त्रिक सहायता से कृषि कार्य करके अधिक उत्पादन प्राप्त करते हैं। इस प्रकार की कृषि में अतिरिक्त उत्पादन प्राप्त होता है जिसका व्यापार किया जाता है।

2. सिंचाई के साधनों की विविधता (Diversity of Means of Irrigation) - हमारे देश के विभिन्न भागों में सिंचाई की भिन्न-भिन्न आवश्यकताएँ हैं। ये आवश्यकताएँ वर्षा की मौसमी प्रकृति, अधिकांश नदियों का भी मौसमी प्रवाह आदि कारणों से उत्पन्न होती है। हमारे देश में सर्वाधिक प्रचलित सिंचाई के साधन कुए, तालाब, नलकूप तथा नहरें हैं। दक्षिणी भारत में कठोर धरातल के कारण तालाब बनाकर सिंचाई करना आसान होता है। उत्तरी भारत के विशाल मैदान में नहरों से सिंचाई करना अधिक सुविधाजनक है। इस क्षेत्र में कुए व नलकूप भी अधिक संख्या में पाये जाते हैं।

3. ऊर्जा के संसाधनों की विविधता (Diversity of Power Resources) - भारत में लकड़ी तथा कच्चा कोयला पारम्परिक शक्ति के साधन रहे हैं। विकास के साथ-साथ एवं आवागमन के साधनों की सुलभता, अधिक एवं विविध स्रोतों की खोज तथा तकनीकी विकास के कारण अब देश के विभिन्न क्षेत्रों में उत्तम किस्म का कोयला, जल विद्युत, खनिज तेल, प्राकृतिक गैस, परमाणु ऊर्जा, सौर ऊर्जा आदि का उपयोग बढ़ रहा है। ऊर्जा के इन विविध स्रोतों के उपयोग का स्तर भारत के अलग-अलग क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न है।

4. खनिज सम्बन्धी विविधता (Diversity of Minerals) - भारत में व्यापक संरचनात्मक भिन्नताएँ पाई जाती हैं। यही कारण है कि भारत की गिनती विश्व के कुछ ऐसे देशों में की जाती है जहाँ विविध प्रकार के खनिज प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। अनेक प्रकार के खनिजों के उत्पादन में तो भारत को लगभग एकाधिकार प्राप्त है। अभ्रक इसका एक उदाहरण है। भारत में अनेक प्रकार के धात्विक एवं अधात्विक खनिज तथा ईंधन खनिज पाये जाते हैं। लगातार नई-नई खोजों से हमारे देश में खनिज तेल एवं प्राकृतिक गैस का उत्पादन भी काफी बढ़ रहा है। तकनीकी विकास के साथ-साथ भारत में परमाणु ऊर्जा, सौर ऊर्जा एवं पवन ऊर्जा के और भी विकसित होने की विपुल सम्भावनाएँ हैं।

5. औद्योगिक विविधता (Industrial Diversity) - कृषि की भांति हमारे देश में औद्योगिक विकास की अवस्थाओं के विविध रूप भी देखने को मिलते हैं। भारत पारम्परिक रूप से कुटीर उद्योगों की दृष्टि से विख्यात रहा है, यद्यपि आज हमारे देश के कुटीर उद्योग संकट की अवस्था में हैं। हमारे देश के विभिन्न भागों में विविध प्रकार के कुटीर उद्योग, हथकरघा उद्योग, लघु उद्योग एवं वृहत पैमाने के उद्योग

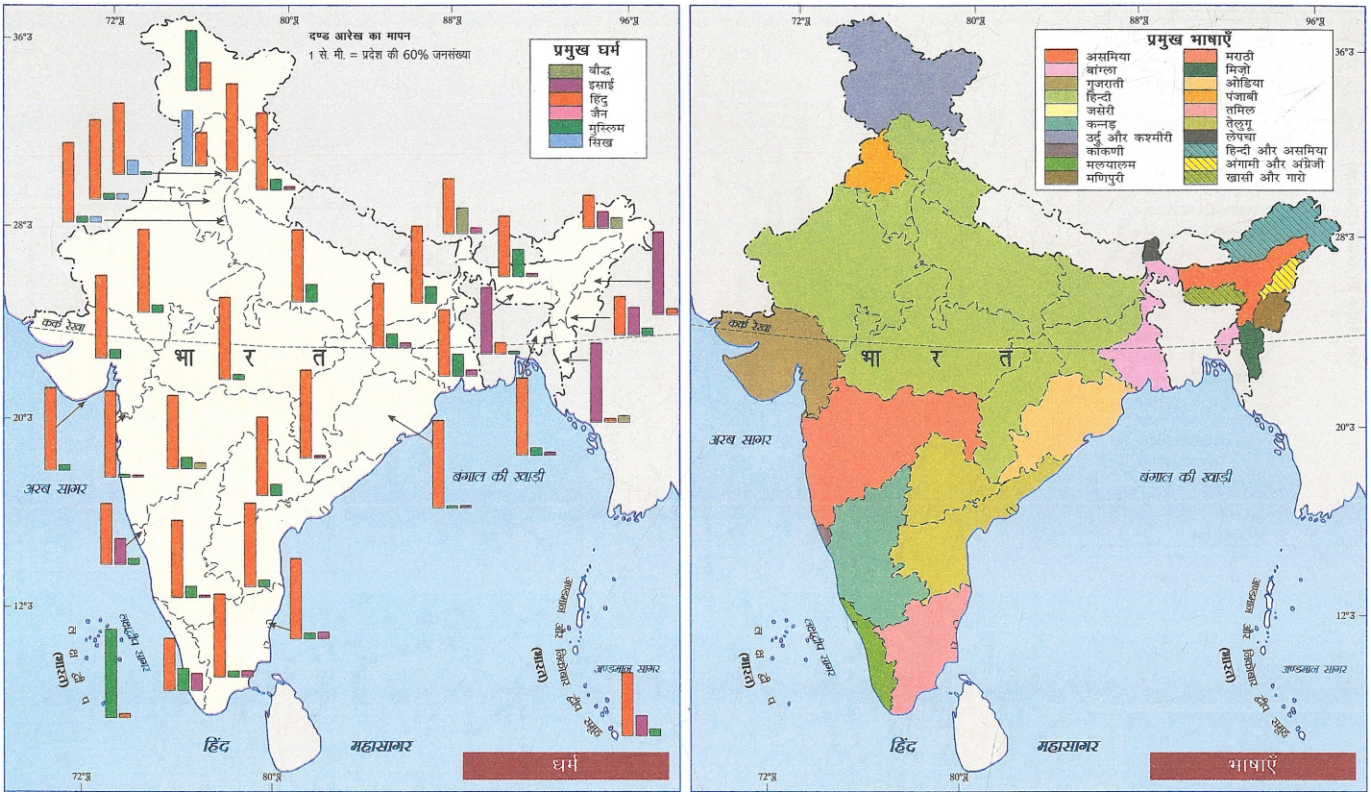

चित्र 2.3 - भारत में विविधताएँ

विकसित हो रहे हैं।

6. आवागमन के साधनों की विविधता (Diversity of Means of Transportation) - भारत के बड़े-बड़े शहरों में विविध प्रकार के आवागमन के साधनों का सम्मिश्रण बड़ा ही रोचक दृश्य उपस्थित करता है। हमारे कई शहरों में आज भी साईकिल रिक्शा, तांगा, बैलगाड़ी, ऊँटगाड़ी, ऑटो रिक्शा, टैक्सियाँ, कारें, ट्रक, बस, रेलें, वायुयान आदि एक साथ उपयोग में आते हुए देखे जा सकते हैं।

7. संचार के साधनों की विविधता (Diversity of Means of Communication) - आवागमन के साधनों की तरह हमारे देश में संचार के साधनों में भी व्यापक विविधताएँ पाई जाती हैं। हमारे देश की अनेक जनजातियाँ आज भी ढोल बजाकर अथवा विभिन्न प्रकार की आवाजों के माध्यम से संदेशों का आदान-प्रदान करते हैं। वहीं दूसरी ओर विकास के पथ पर अग्रसित भारत ने सैटेलाइट के माध्यम से संचार के क्षेत्र में विशिष्ट सफलताएँ अर्जित की हैं। नवीनतम संचार के साधनों में टैलिफोन, मोबाइल फोन, टैलीग्राफ, फैक्स, रेडियो, टैलिविज़न, इन्टरनैट आदि हमारे देश में अब लोकप्रिय संचार के साधन बन गये हैं।

ग. जनसांख्यिकीय विविधताएँ (Demographic Diversities)

इस दृष्टि से भारत विश्व में एक अनूठा देश है। विश्व के किसी भी देश में इतनी अधिक जनसांख्यिकीय विविधताएँ नहीं पाई जाती हैं जितनी भारत में। यहाँ न केवल विभिन्न प्रजातियों, जातियों, जनजातियों, धर्मों व सम्प्रदायों के लोग एक साथ अनूठी एकता के सूत्र में बंधे हुए निवास करते हैं बल्कि यहाँ के निवासियों की विविध भाषाएँ, उत्सव, कला, नृत्य-संगीत, वेश-भूषा, रीति-रिवाज आदि इस विविधता में मनमोहक रंग घोलते हैं। यह हमारे देश की ही विशेषता है कि विश्व के सभी प्रमुख धर्मों के लोग हमारे देश में शान्ति, सहयोग और सद्भाव के साथ मिलकर रहते हैं। विभिन्न भागों में होने वाले विविध प्रकार के मेले, उत्सव, नृत्य, संगीत आदि हमारे देश की सांस्कृतिक समृद्धि के प्रतीक हैं। होली, दीपावली, लोढ़ी, ईद, क्रिसमस आदि के उत्सव हमारे समाज में देखते ही बनते हैं।

हमारे देश की सांस्कृतिक एवं जनसांख्यिकीय विविधताएँ इतनी अधिक हैं कि उन सबको केवल एक बिन्दु में समाविष्ट करना सम्भव नहीं है। इन विविधताओं का प्रत्यक्ष सम्बन्ध देश के सांस्कृतिक ही नहीं बल्कि सामाजिक पहलुओं से भी है। अतः सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष से सम्बन्धित विविधता का विस्तार से विवरण अलग इकाई में प्रस्तुत किया गया है।

विविधता में एकता (Unity in Diversity)

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि हमारे देश को अनेकानेक प्राकृतिक, आर्थिक एवं जनसांख्यिकीय विविधताएँ उपहार के रूप में प्राप्त हुई हैं। प्रकृति ने हमारे देश को इससे भी अधिक अनुपम उपहार **विविधता में एकता** दिया है। हमारे दैनिक जीवन के अनुभवों से यह पक्ष इतना अधिक सहज लगता है कि ये विविधताएँ होते हुए भी व्यवहार में हमें एकरूपता एवं समरसता का प्रतीक लगती हैं। इसीलिये हम सारी विविधताओं के बावजूद **भारतीय** के रूप में सदैव एक रहे हैं। **हमारी राष्ट्रीय शक्ति हमारी एकता में ही निहित है।** एकता के इसी सद्भाव और समरस भाव में हम सबका कल्याण एवं हमारी सम्पन्नता निहित है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब-जब विदेशियों एवं स्वार्थी तत्वों ने हमारी इस एकता में सैंध लगाने में आंशिक सफलता प्राप्त की है, तब-तब हमारा देश कमजोर, राजनैतिक दासता एवं आर्थिक शोषण का शिकार हुआ है। किन्तु जब-जब हमारे देश पर किसी प्रकार का खतरा आया है तब-तब हमारे देशवासियों ने अद्भुत एकता का परिचय दिया है। इन सभी दुर्भाग्यशाली घटनाओं ने हमें यह सीखने की प्रेरणा दी है कि सभी विविधताओं के बावजूद एकता में ही हमारी शक्ति, सामर्थ्य, राजनैतिक स्वतंत्रता एवं आर्थिक सम्पन्नता निहित है। हमारी सामाजिक व आर्थिक सुरक्षा एवं राष्ट्रीय गौरव इसी एकता को बनाये रखने से सम्भव है। अतः हमें इसे हर कीमत पर बनाये रखना है।

कुछ स्वार्थी तत्व एवं विदेशी ताकतें हमारे देश की विविधताओं को **अपकेन्द्रीय शक्ति (Centrifugal Force)** के रूप में प्रक्षेपित करने का प्रयास करती रहती हैं। भारतीय के रूप में हमें उनकी इन कुत्सित भावनाओं और षड़यन्त्रों से सावधान रहना चाहिये। ये ताकतें एवं स्वार्थी तत्व हमारे देश की प्रगति एवं निरन्तर बढ़ती हुई शक्ति से ईर्ष्या रखते हैं, इसलिये हमारे देश को विभाजित करना, कमजोर करना अथवा आर्थिक दृष्टि से नुकसान पहुँचाना ही इनका उद्देश्य है। अतः यदि हमें सम्पन्नता एवं गौरव के साथ रहना है और हमारे देश को सशक्त और सम्पन्न बनाना है, तो हमें हमारे देश की इस **अनुपम एकता** को सदैव बनाए रखना होगा।

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. हमारे देश में अनेकानेक विविधताएँ पाई जाती हैं।
2. भारत में पाई जाने वाली विविधताओं को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है - प्राकृतिक, आर्थिक एवं जनसांख्यिकीय विविधताएँ।
3. प्राकृतिक विविधताएँ - स्थलाकृतिक, संरचनात्मक, जलवायुविक, जल प्रवाह सम्बन्धी, जलीय आवश्यकताओं सम्बन्धी, मृदा सम्बन्धी तथा वनस्पतिक विविधताएँ।
4. आर्थिक विविधताएँ - कृषिगत, सिंचाई के साधनों सम्बन्धी, ऊर्जा के संसाधन सम्बन्धी, खनिज सम्बन्धी, औद्योगिक, आवागमन के साधनों से सम्बन्धित एवं संचार के साधनों से सम्बन्धित।
5. जनसांख्यिकीय विविधताएँ।
6. **विविधता में एकता** - भारत को **अनोखा प्राकृतिक उपहार, राष्ट्रीय एकता एवं गौरव का परिचायक।**

अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

1. हमारे देश का प्राचीनतम स्थलाकृतिक स्वरूप है -
   (अ) थार का मरूस्थल
   (ब) तटीय मैदान
   (स) दक्षिण का पठार
   (द) हिमालय।
2. भारत में प्रचलित विभिन्न प्रकार की कृषि में प्राथमिक रूप है -
   (अ) स्थानान्तरित
   (ब) बागाती
   (स) व्यापारिक
   (द) मिश्रित।
3. भारत में शीतकालीन मानसून जिस दिशा में चलते हैं, वह है -
   (अ) स्थल से जल की ओर
   (ब) जल से स्थल की ओर
   (स) पश्चिम से पूर्व
   (द) दक्षिण से उत्तर।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न -

4. हमारे देश में पाई जाने वाली किसी अवशिष्ट श्रेणी का नाम बताइये।
5. भारत में नवीनतम निक्षेप जिन स्थलाकृतिक प्रदेशों में पाये जाते हैं उनके नाम बताइये।
6. हमारे देश में नवीन मोड़दार पर्वतीय क्रम से सम्बन्धित कौनसी श्रृंखला है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न -

7. हमारे देश में ऋतु के अनुसार पवनों की दिशा में विपरीत परिवर्तन क्यों होता है?
8. थार के मरूस्थल में ग्रीष्म ऋतु में न्यून वायुदाब क्यों विकसित होता है?
9. भारत में संचार के साधनों से सम्बन्धित क्या विविधताएँ पाई जाती हैं?

10. भारत में जलीय आवश्यकताओं की विविधता से क्या आशय है?

निबन्धात्मक प्रश्न –

11. भारत में प्राकृतिक विविधताओं पर एक लेख लिखिये।
12. भारत में आर्थिक विविधताएँ बताते हुए उनकी एकता का स्पष्टीकरण दीजिये।

आंकिक प्रश्न –

13. जलीय आवश्यकताओं से सम्बन्धी विविधताओं को भारत के रूपरेखा मानचित्र में प्रदर्शित कीजिये।
14. भारत के रूपरेखा मानचित्र में स्थानान्तरित कृषि एवं ज्वार, बाजरा की कृषि के क्षेत्र प्रदर्शित कीजिये।

उत्तरमाला – 1. स 2. अ 3. अ